गरीबी से छुटकारा

● ब्रह्माकुमार गणेश, कोलकाता (बांगूर)

मैं मूल रूप में दरभंगा जिले का रहने वाला हूँ। गरीबी के कारण माता-पिता मुझे पढ़ा नहीं सके। सन् 1972 में दस साल की आयु में कोलकाता में कार्य की खोज में आया। कोलकाता में एक परिवार में 15 रुपये महीने की तनख्वाह पर नौकरी की। अठारह साल की आयु तक कमा-कमाकर घर पैसे भेजता रहा। इसके बाद ठेला गाड़ी पर नाश्ते का सामान बनाकर बेचने लगा। यह धंधा दस वर्षों तक किया। बाद में एक दुकान किराये पर लेकर उसमें होटल खोला। होटल पर मैं लोगों को शाकाहार और माँसाहार दोनों प्रकार का भोजन बनाकर खिलाता था। होटल ठीक-ठाक चलता था।

शिव और शंकर का सत्य परिचय

सन् 2002 में मेरी दुकान पर एक भाई आया। वह ब्रह्माकुमारी आश्रम में जाता था। मैंने होटल में बहुत देवताओं के चित्र लगा रखे थे। उसने पूछा, आप शिव भगवान के बारे में क्या जानते हैं? मैंने कहा, जैसे सब पूजा करते हैं, हम भी करते हैं। दुकान में एक चित्र लगा था जिसमें शंकर जी शिवलिंग का ध्यान कर रहे थे। उस चित्र की तरफ इशारा करके उसने पूछा, शिव और शंकर के बारे में आप क्या जानते हैं? मैंने कहा, वही शिव हैं, वही शंकर हैं, दोनों एक ही हैं। उसने कहा, शिव और शंकर अलग-अलग हैं। यह बात मुझे तीर की तरह लग गई। मैं शिव और शंकर की बहुत भक्ति करता था। हर साल वैद्यनाथ धाम जाता था और शिव पर कावड़ चढ़ाता था। मैंने पूछा, अलग-अलग कैसे हैं? उसने कहा, आश्रम पर चलो। मैं उसके साथ बांगूर (कोलकाता) आश्रम में आ गया। वहाँ सात दिन का कोर्स किया, बहुत अच्छा लगा। निश्चय हो गया कि शंकर देहधारी हैं और शिव निराकार हैं। शिव रचयिता हैं और शंकर रचना हैं।

शाकाहार का पालन

इसके बाद मैं रोज़ सुबह बाबा की मुरली सुनने सेवाकेन्द्र पर आने लगा। मुरली सुनते-सुनते मन पवित्र होने लगा। मैं माँसाहारी था पर ईश्वरीय ज्ञान सुनने के बाद मैं शाकाहारी बन गया। मेरे होटल पर भी माँसाहारी भोजन बनता था। मैं भी बनाता था, नौकर भी बनाता था। ज्ञान में आने के बाद निश्चय किया कि ऐसा भोजन न खाना है, न बनाना है और न बेचना है। जब मैंने माँस वर्जित कर दिया तो मेरे तीनों नौकर काम छोड़कर चले गये। उन्होंने कहा, यह नहीं बनेगा तो हम

काम नहीं करेंगे। वे खुद भी खाने-पीने वाले थे। मैंने कहा, ठीक है, जाओ, मैं होटल अपने आप चला लूँगा। हफ्ता भर होटल बंद रहा। फिर बाबा ने बहुत हिम्मत दी और मैंने उसे चालू कर दिया।

पहले से भी ज्यादा चलता है धंधा

अगले दिन एक शाकाहारी नौकर को बाबा ने अपने आप भेज दिया। जो तीन गये थे, उनमें से भी दो वापस आ गये। मुझे लोगों ने कहा, यह ओमशान्ति में जाकर पागल हो गया है। ऐसे शाकाहारी भोजन बनायेगा तो होटल चलेगा नहीं। मैंने कहा, चले या न चले, मैं चिन्ता नहीं करूँगा। भगवान मेरे साथ है, जरूर चलेगा। एक हफ्ता तकलीफ हुई, फिर होटल खूब चलने

लगा। मैं जिस इलाके में रहता हूँ, उसमें सभी माँसाहारी होटल हैं। एक मेरा ही शाकाहारी है। इसलिए होटल खूब चलने लगा। जो आदमी कहता था, होटल नहीं चलेगा, वह भी भोजन लेने वालों की लाइन में लगकर मेरे होटल से भोजन लेता है और कहता है, क्या चमत्कार हो गया जो तुम्हारा काम इतना बढ़ गया।

सारा चमत्कार बाबा का है, बाबा ने मुझे काँटे से फूल बना दिया। हिम्मत का एक कदम बढ़ाओ तो हजार कदम बाबा मदद करते हैं। अभी बहुत खुशहाल हूँ। हर साल बाबा से मिलने मधुबन जाता हूँ। अभी बाबा ने गरीबी दूर कर दी है।❖

न भूलें करावनहार की महिमा

– प्रकाश लोहिया, पूर्व प्रबंधक, राजस्थान बैंक, डीग (भरतपुर)

हम रहने वाले से मोह न करके, जाने वाले से मोह करते हैं, यही बंधन है। सच्ची चीज़ कभी बदलती नहीं। रोटी, कपड़ा, मकान बचे रहते हैं, हम चले जाते हैं। फिर भी निर्वाह की चिन्ता करते हैं, यही आश्चर्य की बात है। कहा भी गया है,

मुर्दे को भी मिलत हैं लकड़ी, कपड़ा, आग,
जीवित जो चिन्ता करें तिनके बड़े अभाग।

जब सारी चिन्ताएँ बाबा को दे ही दीं तो पल-पल मृत्यु का भय और मेरे मरने के बाद क्या होगा, इस तरह का चिन्तन व्यर्थ है। कठिन से कठिन अवस्था में भी बाबा याद रहने चाहिएँ। पांच ज्ञानेन्द्रियाँ संसार के पाँच गवाह हैं। पाँचों अलग-अलग बात बताते हैं। आपस में इनकी बात नहीं मिलती, फिर इनका क्या भरोसा? अन्त:करण की शुद्धि की पहचान है – नाशवान में आकर्षण समाप्त हो जाना। जब तक संसार से अलग नहीं होते, तब तक संसार के दोष नहीं दिखते। संसार का काम तो चलता रहेगा, रुकेगा नहीं। जैसे अन्न, जल, औषध खुद ही को लेनी होती है, ऐसे ही अपना कल्याण भी खुद को करना है।

हरेक को अपनी निन्दा बुरी लगती है, प्रशंसा अच्छी। निन्दा दूसरे कोने से हो या समीप से हो, निन्दा तो निन्दा ही है, उस पर हमारा क्या वश चलता है, उसे रोक सकते नहीं। उससे द्वेष करने में, उसे बुरा समझने में हमारा लाभ नहीं है। वस्तुत: निन्दा करने वाला हमारे पापों का नाश करता है क्योंकि प्रशंसा करने वाला तो अहंकार को जन्म देने वाला उत्प्रेरक भी साबित हो सकता है। जो किसी को दुख नहीं देता उसको देखने मात्र से पुण्य हो जाता है।

परमात्मा को सुनते हैं, संसार को देखते हैं। किसी-किसी को परमात्म दर्शन और अनुभव भी हो जाता है। परमात्मा में कभी परिवर्तन हुआ हो, ऐसा हमने सुना नहीं। संसार निरन्तर बदलता है। संसार इतना तेज़ी से बदल जाता है कि उसे दो बार नहीं देख सकते। बीज को उबाल दिया जाए या भून दिया जाए तो फिर बीज, बीज न रह करके खाद्य सामग्री बन जाता है और उस बीज से कुछ भी पैदा नहीं होता। ऐसे ही विकार तथा व्यसन, धर्म के अंकुर को जला देते हैं। ज्ञान का सार यही है, भाव सबके हित का रखो और याद बाबा को करो।

माँ लड्डू सब बालकों को देती है पर थप्पड़ अपने बालक को ही लगाती है। अपनेपन में जो प्यार है, वह लड्डू में नहीं है। दुख आने पर पुराने पापों का नाश होता है। मन में ज्ञान का प्रकाश होने पर हम विकारों पर विजय प्राप्त कर सकेंगे। भगवान को अपना मानने की ज़िम्मेदारी हमारी ही है। भगवान ने तो हमें अपना मान ही रखा है। ❖